Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 7, Aug 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

" भारतीय संस्कृती और राम साहित्य से जुडे कला संदर्भ "

प्रमोद पाटील

हिन्दी विभागाध्यक्ष
इंद्रराज महाविद्यालय, सिल्लोड,
जि. औरंगाबाद

भूमिका :

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृती होती है। संस्कृती के बीना राष्ट्र, धर्म तथा साहित्य अधूरा–सा है। संस्कृती मनुश्य को जोडने का कार्य करती है। भारतीय संस्कृती महान है। जिसके कारण भारतीय संस्कृती के प्रति श्रध्दा, आदर की भावना स्वाभाविक है।

डॉ. रामवारी सिंह ने संस्कृती सुख नहीं सदाचार है। संस्कृती ताकत नहीं विनम्रता है। संस्कृती संचय नही त्याग है। संस्कृती विजय नही मैत्री है। संस्कृती का परम रूप अहिंसा है। विरोधी के मन को भी क्लेश न देना, संस्कृती व्यक्ती दुराग्रह नहीं करेगा। विरोधियों के पक्ष को भी आदरदेगी।[1]

डॉ. राधाकृश्ण के अनुसार, जीवन की समस्याओं के बारे में जाने और माने हुए सर्वश्रेष्ठ विचारों के ध्यान से संस्कृती का जन्म माना जाता है।[2]

भारतीय संस्कृती में राम साहित्य को बडा महत्व है। वाल्मिकी के रामायण, तुलसी के रामचरितमानस, कबीर के राम, नरेश मेहता के संशय कि रात, निराला के राम की शक्तिपुजा आदी प्राचीन तथा आधुनिक काव्यों में राम के दर्शन होते है। संस्कृत भाशा में वाल्मिकी ने सबसे पहले रामायण की रचना की। भारतीय भाशाओं के राम को विशेश स्थान प्राप्त है।

तुलसी के रामचरितमानस में राम–

हिंदी साहित्य में रामचरितमानस लोकप्रिय ग्रंथ है। तुलसी को इस रचना के कारण बहुत सम्मान प्राप्त है। यह ग्रंथ हिंदु–धर्म संस्कृती का आधारस्तंभ है। विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में रामचरितमानस के दर्शन होते है। परंतू मानस में राम शक्ति, शील एंव सौन्दर्य का भंडार है। राम एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श बंधु आदर्श मित्र है। जिसके कारण सामान्य लोगों में उनके प्रति बडा आकर्षण है। वे सर्वगुण संपन्न होने कारण सब के हदय में राज करते है। रामचरितमानस का कथाविन्यास वाल्मिकी के रामायण तथा अध्यात्म रामायण के आधारपण्र हुआ है। तुलसीने इस रचना में राम को मर्यादा पुरूशोत्तम के चरित्र में उजागर किया है। राम का चरित्र एक आदर्श राजा का चरित्र है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है, भारतीय जनता का प्रतिनिधी कवि यदी किसी को कह सकते है तो तुलसीदास को, रामचरितमानस उनकी अक्षय कीर्ती का आधार है। इस ग्रंथ के राम एक आदर्श चरित्र है, मर्यादा पुरूशोत्तम है। समाज के प्रत्येक वर्ग में ही आदर्श व्यवहार की कसौटी राम का चरित्र है। यह ग्रंथ व्यवहार का दर्पण है।

तुलसी ने मानस के आध्यत्म से जनता के लिए बहुत बडे वर्ग को जीवन के नैतिक मुल्यो की शिक्षा भी दी है। उन्होंने राम के द्वारा एक आदर्श चरित्र प्रस्तुत किया है। उसके साथ ही लोक कल्याण की कामना करते हुए जनता को नैतिकता एंव सदाचार का पाठ भी पढाया है।

उन्होंने मानस के माध्यम से समाज को स्वस्थ सुखी, त्यागी आदर्श परिवार की झॉकी दिखाई है। यदि राम में वीरता, धीरता, गंभीरता, नम्रता, आज्ञा–पालन, उदारता, क्षमा आदि गुण है तो सीता पतिव्रता है। लक्ष्मण आज्ञाकारी है तो भरत बंधु प्रेम के पर्याय है। हनुमान आदर्श सेवक है।[3]

तुलसी के राम लोकनायक है। उन्होंने समाज में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। वे नैतिक गुणो के साथ–साथ समाज कों सामाजिक गुणों सत्य, दया, विवके, समता आदि अपनाने का आग्रह करते है। तुलसी का दृष्टीकोन मानवतावादी है। उन्होंने लोक संग्रह की भावना को जागृत किया है। तत्कालिन पद दलित, उपेक्षित, दीन–दुःखी समाज को राम का आदर्श बताकर तुलसीने व्यावहारिक आदर्शवाद प्रतिपादित किया है। प्रकाशचंद्र गुप्त ने लिखा है, तुलसी की दृष्टि व्यापक और सार्वभौमिक थी। जीवन के प्रति उनका दुष्टीकोन स्वस्थ और

Please cite this Article as : *प्रमोद पाटील* **,** *" भारतीय संस्कृती और राम साहित्य से जुडे कला संदर्भ "* **: Indian Stremas Research Journal (Aug. ; 2012)**

जनवादी था।[4]

सुर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में राम–

हिंदी के लोकप्रिय कवि निगला ने राम की पूजा में राम का सशक्त चित्रण किया है। राम की शक्ती पुजा उनका राम काव्य है। प्रस्तुत काव्य में राम की मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। राम के मन में रावण से होनेवाले आगामी युद्ध की भयंकरता के विषय में चिंता और निराशा का भाव उत्पन्न होता है। राम अपने सहयोगियों से रावण की शक्ति के संदर्भ में परामर्श करते है। इस काव्य में युद्ध की विभीशिका का वर्णन करके राम की चिंता दर्शायी है। राम की पूर्व–स्मूर्ति सहसा विद्युत सी चमकती है और उन्हें पुश्पवाटिका मिलन, सीता–स्वयंवर समय की घटनाएं याद आती है।[5]

साथियों की सलाह से राम विजय प्राप्ति हेतू शक्ति पूजा का अनुश्ठान करते है। देवी भागवत में वर्णन है की राम–रावण के अंतिम युध्द के पूर्व राम ने नारद के कहने से देवी की उपासना की। इस काव्य में जाम्बवंत के कहने पर राम को आराधना करने की सलाह देते है। साधना के छठे दिन राम का मन त्रिकुटी पर पहुचता है। अंत में 108 पुश्पों की भेट पुजा में एक कमल पुष्प गिनती में कम रह जाता है। जिसके कारण राम दुःखी होते है। राम कमल के स्थान पर अपनी एक ऑख निकालकर भेट चढानें को तयार हो जाते है।

अंत में देवी के प्रकट होने ओर आशीर्वाद देने के साथ रचना की समाप्ति होती है। कला की दृष्टि से यह काव्य श्रेष्ठ है। उद्देश की दृश्टि से यह रचना महान है। इस काव्य के संबंध में विश्वभर मानव ने लिखा है, इतनी लम्बी रचना में न तो कही शिथिलता है, न एक भी व्यर्थ की बात। प्रस्तुत कविता में राम के हदय में विरोधी भावों का संघर्श बडी कुशलता से दिखाया गया है। कवि ने राम के मानसिक संघर्श का सुंदर चित्रण किया हैं। इसके हनुमान के क्षोभ और अलोकिक चमत्कार का वर्णन है। राम के ऑसू को देखकर क्रोध में हनुमान उत्तेजित होकर सृष्टि का नाश करने पर उतारू हो उठते है। वे आकाश में छलांग लगाते है पर तभी माता की फटकार सुनकर पुनःपृथ्वी पर उतर आते है। हनुमान के इस क्रिया क्लाप में अलौकिक चमत्कार दिखाई देता है।

निष्कर्ष–

भारतीय संस्कृति में राम साहित्य को बडा सन्मान प्राप्त है। वर्तमान समय में मनुष्य समाज, धर्म तथा अपनी संस्कृति से कोसों दूर जा रहा है। ऐसे समय राम साहित्य के माध्यम से निराशा, कुंठा से उसे बाहर निकालने का कार्य राम साहित्य कर सकता है। मनुष्य में चेतना जागृत करने का कार्य राम साहित्य करता है, इसलिए राम साहित्य भारतीय संस्कृति का आधार स्तंभ है।

संदर्भ–

1.भारतीय संस्कृति के मूलतत्व – सोनी विरेंद्र चंद्र– पृ. 8
2.रागेय राधव के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन– वेंकटेश्वर पृ. 24
3.व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं रचना– डॉ. शिवकांत गोस्वामी पृ. 123
4.वही पृ. 124
5.रामचरितमानस और कौशिक रामायण का तुलनात्मक अध्ययन– डॉ. मुकूंदप्रभू पृ. 31